Notes

14

रिश्तेदारी

व्यक्ति की प्रकृति सामाजिक है, वह कई व्यक्तियों के साथ भिन्न-भिन्न प्रकार के सम्बन्ध स्थापित करता है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण सम्बन्ध नातेदारी का है। आप अपने परिवार में और परिवार से बाहर अन्य लोगों के साथ घिरे रहते हैं।

एक सामान्य वयस्क पुरुष किसका पुत्र है, भाई है, भतीजा है, चाचा है और इस तरह उसके नातेदारी की हैसियत विभिन्न प्रकार की है। एक स्त्री किसी की पुत्री है, किसी की बहिन है, पत्नी है, मां है, चाची है इत्यादि।

इस तरह के सम्बन्ध जो विवाह या रक्त सम्बन्धों के कारण होते हैं, नातेदारी सम्बन्ध कहलाते हैं। इस पाठ में आप नातेदारी सम्बन्धों और इसके विभिन्न पहलुओं पर सामग्री पायेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- नातेदारी की परिभाषा और उसका अर्थ समझ सकेंगे;
- नातेदारी के विभिन्न प्रकार और उनकी दूरियों की जानकारी प्राप्त करेंगे;
- नातेदारी के प्रकार्य और उसके महत्व को जानेंगे;
- नातेदारी पदावली का वर्णन करेंगे;
- नातेदारी समूहों के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कर सकेंगे; और
- नातेदारी व्यवहार की रीतियां समझ सकेंगे।

14.1 नातेदारी का अर्थ एवं परिभाषा

नातेदारी हमारे सम्बन्धों को समझने का एक तरीका है। यह एक सामाजिक बन्धन है, जिसका कारण रक्त-सम्बन्ध और विवाह है। सामान्य शब्दों में नातेदारी में वे रिश्ते आते हैं जिनका सम्बन्ध रक्त तथा विवाह से होता है। नातेदारी वह व्यवस्था है, जो पारिवारिक सम्बन्धों और विवाह से जुड़ी हुई है। रक्त सम्बन्धियों के अतिरिक्त यह जुड़ाव प्रजनन और दत्तकग्रहण के माध्यम से होता है। सच्चाई यह है कि सामाजिक जान-पहचान जैविकीय जान-पहचान की अपेक्षा सामाजिक सम्बन्धों को मान्यता देने की है। यदि किसी सम्बन्ध को समाज मान्यता नहीं देता है तब इसे नातेदारी के क्षेत्र में नहीं लाया जाता।

नातेदारी सम्बन्ध तभी मान्यता रखते हैं, जब वे वंशक्रम से जुड़े होते हैं। इसके अतिरिक्त ये सम्बन्ध विवाह या दत्तकग्रहण से जुड़े होते हैं। ये सम्बन्ध जैविकीय मुहावरे में अभिव्यक्त होते हैं। इस भाँति नातेदारी की परिभाषा में यह कहा जा सकता है कि व्यक्तियों के सम्बन्धों का आधार वंशक्रम विवाह या दत्तकग्रहण होते हैं।

नातेदारी सम्बन्धों का विस्तार तभी संभव होता है जब सामान्य वयस्क दो प्रकार के परस्पर व्यापन (Over lapping) द्वारा अर्थात अभिविन्यास का परिवार और प्रजनन का परिवार होता है। अर्थात् नातेदारी सम्बन्ध अभिविन्यास और प्रजनन परिवार से बनते हैं। विवाह के निषेधात्मक नियम और निकटाभिगमन निषेध के नियम, एक ही व्यक्ति को एक ही परिवार में, पिता और पति की तरह जिस परिवार के वे सदस्य हैं, बनने नहीं देते।

एक व्यक्ति अभिविन्यास परिवार में पैदा होता है और बाद में विवाह द्वारा वह दूसरे प्रारम्भिक परिवार को विवाह या प्रजनन द्वारा स्थापित करता है।

14.2 नातेदारी के प्रकार

परिवार का अध्ययन करने के बाद अब हम नातेदारी का अध्ययन करेंगे। विवाह कर लेने के बाद ही हम नातेदारी को समझ सकते हैं। बुनियादी रूप से एक परिवार में दो प्रकार के नातेदार होते हैं:

1. वैवाहिक नातेदार
2. समरक्त नातेदार

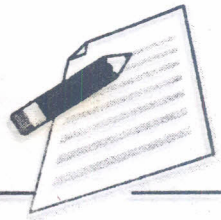

1. वैवाहिक नातेदार

इस प्रकार का नातेदार विवाह पर आधारित नातेदार है, इसी कारण इसे वैवाहिक नातेदार कहते हैं। सबसे प्राथमिक वैवाहिक नातेदार पति और पत्नी हैं। अपने विस्तारित स्वरूप में इन दो नातेदारों में दम्पत्ति और सहोदर भाई बहिन होते हैं। इस प्रकार दामाद और ससुर की नातेदारी वैवाहिक है। इसी तरह साले और साली की नातेदारी भी वैवाहिक है।

2. समरक्त नातेदार

दूसरे प्रकार की नातेदारी वंशक्रम पर आधारित है और इसलिए इसे रक्त सम्बन्धी नातेदार कहते हैं।

एक बच्चे और उसके माता-पिता के सम्बन्ध रक्त सम्बन्धी हैं। इसी तरह चाचा व भतीजे का सम्बन्ध भी रक्त सम्बन्ध है। रक्त सम्बन्धी नातेदार जननिक हैं जो कि माता-पिता और बच्चों में पाये जाते हैं। माता और बच्चे का सम्बन्ध रक्त सम्बन्धों की शुरूआत है जो कि अपने विस्तृत अर्थ में बच्चे के पिता, दादा, चाचा, चचेरे भाई बहिनों, चाची आदि में पाया जाता है।

नातेदार हमेशा एक दूसरे से रक्त या विवाह द्वारा ही जुड़े नहीं होते अपितु कई बार बोलचाल में इन्हें नातेदार माना जाता है। ऐसे नातेदार काल्पनिक नातेदार कहलाते हैं। इस तरह के नातेदारों को वास्तविक जैविकीय सम्बधों की अपेक्षा सामाजिक सम्बन्धों के द्वारा मान्यता दी जाती है।

नीलगिरी पहाड़ियों में रहने वाले टोडाओं में एक स्त्री के एक ही समय में एक से अधिक पति होते हैं। इस स्थिति में जैविकीय पिता बच्चे के लिए अलग-अलग होते हैं लेकिन सभी बच्चों का पिता एक ही होता है। पिता का दर्जा एक ही पति को इसलिए दिया जाता है कि वह अपनी एक ही पत्नी के बच्चों को धनुष व बाण देकर धार्मिक दस्तूर पूरा करता है। यद्यपि यह व्यक्ति जिन्दा न हो फिर भी वह उस पत्नी का सम्मिलित पति तथा सभी बच्चों का पिता माना जाता है। बच्चा व बच्चे को दत्तक लेने वाले के बीच सम्बन्ध भी पिता-पुत्र का ही रहता है।

पाठगत प्रश्न 14.1

1. निम्न कथन 'सही' है या 'गलत'; बताइए

   नातेदारी एक ऐसा सम्बन्ध है, जिसका आधार रक्त सम्बन्ध या विवाह होता है।

2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

वंशक्रम पर आधारित नातेदारी ..... है।

3. निम्न में से सही उत्तर छांटिए:

जिस परिवार में व्यक्ति पैदा हुआ है, उसे कहते हैं-

(i) प्रजनन का परिवार

(ii) अभिविन्यास का परिवार

(iii) कोई नहीं

(iv) दोनों हीं

14.3 निकटता पर आधारित नातेदार

हम नातेदारी के सम्बन्धों को श्रेणियों में रखने के लिए नातेदार की निकटता के आधार पर उसके प्रकार बनायेंगे:

1. **प्राथमिक नातेदार:** प्राथमिक नातेदार या निकटस्थ नातेदार वे हैं जो एक दूसरे के नजदीक होते हैं। इन नातेदारों का सम्बन्ध अभिविन्यास के नातेदारों से होता है। अभिविन्यास के नातेदार वे हैं जहां हमारा जन्म और पालन-पोषण हुआ है। उदाहरण के लिये हमारे पिता-माता, भाई-बहिन हमारे जननिक नातेदार हैं। इनके साथ हमारा सम्बन्ध रक्त सम्बन्ध है। एक व्यक्ति के सात प्रकार के प्राथमिक नातेदार होते हैं। ये प्राथमिक नातेदार -- माता-पिता, पुत्र-पुत्री, भाई-बहिन और पत्नी होते हैं।

2. **द्वैतीयक नातेदार:** हमारे प्राथमिक नातेदार के प्राथमिक नातेदार हमारे द्वैतीयक नातेदार होते हैं। इस तरह द्वैतीयक नातेदारों के 33 प्रकार होते हैं। यानी इसमें सम्मिलित हैं -- पिता के पिता यानी दादा, मां के पिता यानी पैतृक नाना, पिता की मां यानी दादी, पति या पत्नी के भाई और बहिन या माता-पिता इत्यादि।

3. **तृतीयक नातेदार:** प्राथमिक नातेदार के द्वैतीयक नातेदार तृतीयक नातेदार होते हैं। उदाहरण के लिए आपके साले आपके द्वैतीयक नातेदार हैं और उनकी पत्नी व बच्चे आपके लिए तृतीयक नातेदार हैं।

   तृतीयक नातेदार के 151 प्रकार हैं। उदाहरण के लिए पिता के भाई की पत्नी, पिता के बहिन की पति, पिता के मां की भाई, पिता की मां की बहिन तृतीयक नातेदार हैं।

इस भांति नातेदारों की दूरियां चौथे, पांचवें, छठे, दसवीं नातेदारों तक होती है। हमारे तृतीयक नातेदार और चौथे नातेदार भी प्राथमिक नातेदार के प्रकार से चलता है। इस

तरह के नातेदारों में हम रक्त और वैवाहिक नातेदारों को भी लेते हैं। तृतीयक नातेदारों के बाद की श्रेणियां दूर के नातेदार कहलाते हैं। कुछ समाज ऐसे हैं जिनमें दूर के नातेदारों को भी उतना ही महत्व दिया जाता है जितना निकट के नातेदारों को। ऐसा आदिम व ग्रामीण समाजों में होता है। दूसरे समाजों में इन दूर के नातेदारों को कोई महत्व नहीं दिया जाता।

14.4 नातेदारी का आरेख

कई बार आप देखेंगे कि नातेदारी को किसी आरेख द्वारा बताया जाता है। इस आरेख द्वारा नातेदारी और वंशावली के सम्बन्धों को एक चित्र में प्रस्तुत किया जा रहा है।

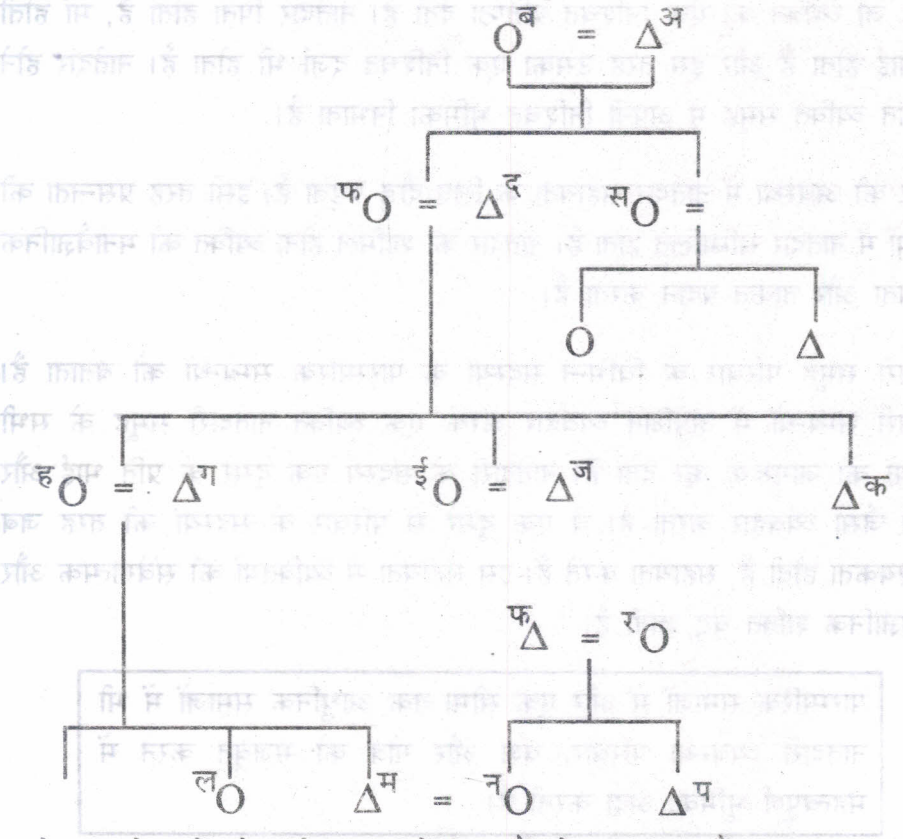

उपरोक्त आरेख में जो संकेत काम में लिए हैं, वे इस प्रकार हैं:

Δ : पुरूष

O : स्त्री

= : विवाह

: नीचे की पीढ़ियां

ईगो वह व्यक्ति है, जिसके माध्यम से रिश्तेदारी को खोजा जाता है। इस आरेख में ईगो का अर्थ **म** यानी पुरूष है। **ग** का तात्पर्य पिता से है और **ह** का माता से। **ल** का तात्पर्य बहिन से है। **द** को मतलब दादा से है जो कि स्वयं **अ** और **ब** माता-पिता हैं। **न** ईगो की पत्नी है और **फ** उसके ससुर और **र** सास हैं। **प** ईगो का साला है।

14.5 नातेदारी के प्रकार्य

व्यक्ति और समूह के लिए सामान्य अर्थ में, नातेदारी महत्वपूर्ण है। इसीलिए कहते हैं कि रक्त पानी से गाढ़ा होता है। नातेदार व्यक्ति के जीवन में सुरक्षा एवं सहायता देते हैं। नातेदारी एक ऐसा समूह है, जो व्यक्ति को उसकी पहचान देता है। यह नातेदारी ही है जो व्यक्ति को एक निश्चित प्रतिष्ठा देती है। नातेदार पिता होता है, मां होती है, भाई होता है और इस तरह उसका एक निश्चित दर्जा भी होता है। नातेदार होने के नाते व्यक्ति समूह में अपनी निश्चित भूमिका निभाता है।

संकट की अवस्था में नातेदार सहायता के लिए दौड़ पड़ता है। इसी तरह प्रसन्नता की घड़ियों में नातेदार सम्मिलित होता है। नातेदार का शामिल होना व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक सहायता और ताकत प्रदान करता है।

नातेदारी समूह परिवार के विभिन्न सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्धों को बताता है। नातेदारी सम्बन्धों में अपेक्षित व्यवहार करके एक व्यक्ति नातेदारी समूह के सभी सदस्यों को जागरूक कर देता है। नातेदारी के सदस्य एक दूसरे के प्रति भाई और बहिन जैसा व्यवहार करता है। वे एक दूसरे से परिवार के सदस्यों की तरह जब आवश्यकता होती है, सहायता करते हैं। इस सहायता से व्यक्तियों को संवेगात्मक और मनोवैज्ञानिक शक्ति बढ़ जाती है।

> पारम्परिक समाजों में और एक सीमा तक आधुनिक समाजों में भी नातेदारी व्यवस्था परिवार, वंश और गोत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

एक ही वंश के लोग मिल-जुलकर परिवार के प्रकार्यों जैसे कि जन्म के संस्कारों, विवाह और मृत्यु में भाग लेते हैं। वंश के लोगों का कुल देव समान होता है और इसलिए वे सामान्य प्रतिबन्ध जो पूजा और दैनिक संस्कारों से जुड़े होते हैं, उसमें भागीदारी करते हैं। एक ही वंश के लोग इस भावना से प्रभावित होते हैं कि वे एक ही परिवार के हैं और इसलिए उन्हें परिवार की परम्परा और परिवार के नाम को बनाये रखना चाहिए।

Notes

एक परम्परागत समाज में नातेदारी समूह जिन्हें गोत्र कहते हैं बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि नातेदारों का यह बहुत बड़ा समूह है जो अपनी उत्पत्ति एक कल्पनात्मक पूर्वज से मानते हैं। ऐसी अवस्था में उनका दिन प्रतिदिन का सहयोग और सुदृढ़ बन्धन बहुत स्पष्ट हो जाता है। लेकिन अधिकांश हिन्दुओं में एक गोत्र के सदस्य अन्त: विवाह नहीं करते क्योंकि वे अपने आपको भाई-बहिन समझते हैं। इस तरह गोत्र वैवाहिक सम्बन्धों को नियंत्रित करता है।

गांव के लोग अपने काल्पनिक नातेदारों को भी बहुत अधिक महत्व देते हैं। पारस्परिकता और निष्ठा को पक्का करने के लिए यह नातेदारी समूह एक दूसरे की सहायता करता है। अगर ऐसा न करें तो काल्पनिक भूमिका केवल रक्त या विवाह तक ही सीमित हो जाती।

सब प्रकार के नातेदार एक दूसरे के राजनीतिक, आर्थिक और व्यावसायिक लाभ के लिए महत्वपूर्ण भूमिका करते हैं। वे एक दूसरे को महत्वपूर्ण सूचना देते हैं और जहां तक संभव हो शारीरिक, भौतिक और मानसिक सहायता करते हैं और इस तरह एक दूसरे की राजनीतिक महत्वाकांक्षा को चुनाव जीतने में पूरा करते हैं। वे रिश्तेदार जो अच्छी स्थिति में हैं, अपने रिश्तेदारों को नये उद्योग- धन्धों और व्यापार बढ़ाने में मदद करते हैं। इस भांति सहायता का एक दूसरे का आधार बन जाता है।

पाठगत प्रश्न 14.2

1. निम्न कथन सही है या 'गलत'; बताइए:

   एक व्यक्ति के दादा उसके प्राथमिक समरक्त नातेदार हैं।

2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

   नातेदारी व्यक्ति और ..... के लिए महत्वपूर्ण है।

3. निम्न में से सही उत्तर छांटिए:

   नातेदारी व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि:

   1. इससे उसकी पहचान और प्रतिष्ठा बढ़ती है,
   2. यह मनोवैज्ञानिक सुदृढ़ता देता है,
   3. यह व्यक्ति की भूमिका और उसके प्रतिमान को परिभाषित करती है,
   4. उपरोक्त सभी।

14.6 नातेदारी पदावली

हम दिन-प्रतिदिन की अन्त:क्रिया में अपने नातेदारों को कुछ निश्चित शब्दों से सम्बोधित करते हैं और कुछ अन्य शब्दों को उन्हें पहचानने और श्रेणियों में विभाजित करने के लिए काम में लेते हैं। इन सब शब्दों को, जो श्रेणियों में होते हैं, नातेदारी पदावली कहते हैं। नातेदारी पदावली में पिता, माता, पत्नी, पति, चाची, चाचा और अन्य लोग होते हैं।

ये नातेदारी के पद परिवार के विभिन्न सदस्यों के अन्तर्सम्बन्धों को समझने में सहायक होते हैं। इन पदों से मालूम हो जाता है कि परिवार में किसकी क्या भूमिका है। नातेदार शब्द परिवार किस प्रकार का है, उसकी ओर हमें इंगित देता है। इसी के द्वारा हम निवास के नियम, वंशज और सामाजिक संगठन की जानकारी मिलती है। नातेदारी पद केवल भाषायी प्रकृति के नहीं है। ये समाजशास्त्रीय भी है। और इनका सम्बन्ध व्यक्ति की प्रतिष्ठा एवं व्यवहार से भी है।

नातेदारी पद विभिन्न प्रकार के हैं। मानवशास्त्रियों ने इन पदों के वर्गीकरण में विभिन्न आधारों को अपनाया है।

(अ) भाषायी संरचना के आधार पर भाषायी पदों को तीन भागों में बांटा गया है:

i. **प्रारम्भिक पद:** ये पद इतने प्ररम्भिक हैं कि इन्हें और छोटे शब्दों में नहीं बदला जा सकता। ऐसे बुनियादी पदों को और सामान्य शब्दों में नहीं रखा जा सकता। इन पदों के उदाहरण हैं – माता-पिता, भाई-बहिन, चाचा-चाची इत्यादि।

ii. **कृत्रिम पद:** वे नातेदारी पद जिन्हें प्रत्यय या उपसर्ग पदों से जोड़ा जाता है, उन्हें सामान्य शब्दों से अलग कर दिया जाता है। इस तरह के नातेदारी पदों को कृत्रिम नातेदारी पद कहते हैं। इस तरह के कृत्रिम पदों को दादा, साली, परदादा और दत्तकपुत्र कहते हैं।

iii. **विवरणात्मक पद:** नातेदारी पद जिन्हें दो या अधिक प्रारंभिक पदों द्वारा बनाया जाता है, विवरणात्मक पद कहते हैं। उदारहण के लिए पत्नी की बहिन (साली), भाई की पत्नी (भाभी), लड़के की पत्नी (बहू), लड़की का पति (दामाद), इत्यादि। ऐसे पदों में चचेरी बहिन भी है।

(ब) पदों के उपयोग में लाने के तरीके दो प्रकारों में बांटे जाते हैं:

i. **सम्बोधन के तरीके:** नातेदारी पद जिनका उपयोग हम नातेदारों के सम्बोधन के लिए करते हैं। इस तरह के पदों के उदाहरण हैं— पापा-डैडी, मां-मम्मी, दीदी-भैया इत्यादि। तमिल भाषा में अन्ना (बड़ा भाई) ताम्बी (छोटा भाई) अक्का (बड़ी बहिन) इत्यादि हैं।

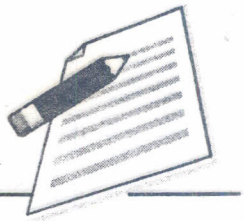

Notes

ii. **संदर्भ सूचक पद:** नातेदारी पद जिनका उपयोग हम किसी अप्रत्यक्ष व्यक्ति के लिए करते हैं, इन्हें संदर्भ पद कहते हैं। इसके दृष्टान्त हैं: पिता, मां, भाई, बहिन, इत्यादि। तमिल में संदर्भ व्यक्ति मामा मागा (मातृ), चाचा की लड़की/लड़का अटाई/भागन/मागल (पिता की बहिन की लड़की/लड़का)।

(स) **व्यवहार में लागू करने की श्रेणी पर आधारित:** लागू करने की श्रेणी के पदों के अनुसार, नातेदारी पद दो प्रकार के हैं:

i. **सूचक/पृथकात्मक/ विवरणात्मक पद:** वह पद जो किसी एक विशेष नातेदारी की श्रेणी पर लागू होता है, उसे विवरणात्मक /सूचक/पृथकात्मक पद कहते हैं। उदाहरण के लिए, 'पिता' और 'माता' हमारे माता-पिता पर ही लागू होता है और किसी अन्य पर नहीं।

ii. **वर्गात्मक पद:** वह पद जो एक या दो श्रेणियों पर लागू होता है, उसे वर्गात्मक पद कहते हैं। उदाहरण के लिए भाई-बहिन का पद जिसका मतलब पिता के भाई के लड़के, पिता की बहिन के लड़के, इसी तरह मां की बहिन के लड़के पर लागू होता है। इसी तरह 'अंकल' के पद का संदर्भ मां के भाई से तथा पिता के भाई और माता की बहिन के पति से होता है।

पाठगत प्रश्न 14.3

1. निम्न कथन 'सही' है या 'गलत'; बताइए:

   विवरणात्मक पद किसी निश्चित प्रस्थिति पर लागू होता है।

2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

   नातेदारी पद जो कि प्रत्यय और उपसर्ग के जोड़ने से बनाये जाते हैं, उन्हें कहते हैं.....

3. निम्न में से सही उत्तर छांटिए:

   नातेदारी पद हमें निम्न तत्वों को समझने में सहायता देते हैं:

   1. विभिन्न सदस्यों के बीच में पारस्परिक सम्बन्ध।
   2. परिवार के सदस्यों की प्रस्थिति और भूमिका समझने में नातेदारी पर सहायक होते हैं।
   3. प्रचलित परिवार-संरचना को समझने के प्रकार।
   4. सामाजिक लक्षणों का अन्तर।
   5. उपरोक्त सभी।

14.7 वंशक्रम के नियम

ये वे नियम हैं जो व्यक्तियों को एक विशेष नातेदारी के कारण एक दूसरे से जोड़ते हैं और जिसका कारण वंशक्रम की समानता होती है। वास्तव में इस तरह के नातेदार सामान्य पूर्वजों के कारण होते हैं। वंशक्रम के ये नियम एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न होते हैं। व्यक्ति इन नियमों से नातेदारों को जोड़ लेते हैं। दाय प्राप्ति और उत्तराधिकार का सम्बन्ध इन्हीं नियमों से होता है। सामाजिक संगठन और समूह भी वंशक्रम के नियमों पर आधारित होते हैं।

वंशक्रम के दो बड़े प्रकार के नियम हैं:-

1. एकल वंशक्रम के नियम
2. द्विवर्ती वंशक्रम के नियम

1. **एकल वंशक्रम के नियम:** एकल वंशक्रम के नियमों में व्यक्ति का वंशक्रम या तो मां की तरफ से देखा जाता है या पिता की तरफ से। इसको दो अन्य उपभागों में बांटा जाता है:

i. **पितृ वंशक्रम:** पितृ वंशक्रम व्यवस्था में एक व्यक्ति अपने पिता के वंश क्रम से जोड़ा जाता है। यह वंशक्रम पुरुष वंशज से होता है। एक पुरुष को अपने पिता से प्रतिष्ठा, नाम और सम्पत्ति मिलती है।

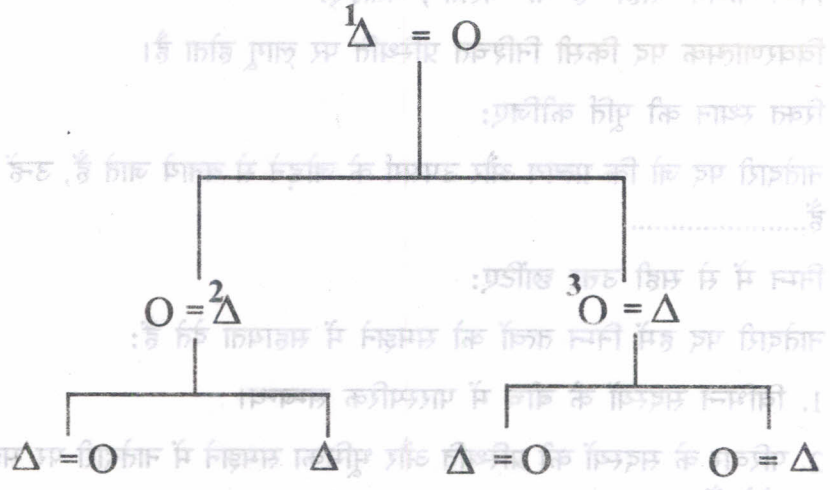

1, 2 और 3, पितृवंशक्रम समूह के सदस्य

ii. **मातृ वंशक्रम:** जब वंशक्रम को स्त्री की ओर से खोजते हैं तब उसे *मातृवंशक्रम* कहते हैं। इस नातेदारी में लड़का और लड़की दोनों ही मां के

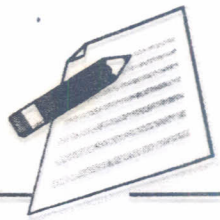

वंशानुक्रम समूह के सदस्य होते हैं। यद्यपि एक स्त्री के लड़के और लड़कियां सभी एक ही वंशक्रम के सदस्य हैं फिर भी लड़की ही अपने नाम, प्रतिष्ठा और सम्पत्ति की अधिकारी होती है। यद्यपि लड़का मातृवंशीय समूह का होता है उसे मां से उत्तराधिकार में कुछ नहीं मिलता।

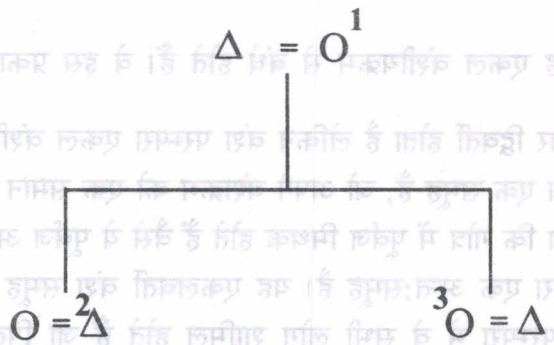

1, 2 और 3 मातृवंश समूह के सदस्य हैं।

(2) **द्विवर्ती वंशक्रम के नियम:** कई समाजों में पिता और माता दोनों की ओर के नातेदारों को समान महत्व दिया जाता है। सम्पत्ति के अधिकार पिता और माता दोनों की ओर से समान होते हैं। ऐसे द्विवर्ती वंशक्रम में या तो दोनों ही वंशक्रम समान समझे जाते हैं या किसी भी वंशक्रम को महत्व नहीं दिया जाता।

वृहद कुटुम्ब का पद इस बात को बताता है कि मातृ और पितृ वंशक्रम के दोनों ही सदस्य विवाह, मृत्यु तथा अन्य समारोहों में आमंत्रित होते हैं।

14.8 नातेदार समूह

नातेदार अपने आप में समूह नहीं होते लेकिन नातेदारी के आधार पर समूहों का निर्माण होता है।

आपको नातेदारी की किसी भी बातचीत में कई प्रकार के एकल नातेदार मिलेंगे जैसे कि परिवार, वंश परम्परा, गोत्र, फ्रेटरी और अर्धांश। ये नातेदार समूह ऐसे लोगों के हैं जो वंश द्वारा अर्थात् वंशक्रम या वैवाहिक संबंधों द्वारा जुड़े होते हैं। यह भावना कि रक्त पानी से गाढ़ा होता है नातेदारों को परस्पर इस तरह बांध देती है कि छोटे-परिवारों एवं वंश-परंपरा को ये गोत्र, फ्रैरेटरी और अर्धांश की तरह निकट ला देती है।

अब हमें उपरोक्त नातेदारी समूहों को विस्तृत रूप से देखना होगा।

आप अभी तक यह जान गए हैं कि परिवार सबसे छोटा नातेदार समूह है। बुनियादी रूप से यह समूह व्यक्ति, उसकी पत्नी और उनके अविवाहित बच्चों से बना है जबकि

आदमी और उसकी पत्नी विवाह से जुड़े हुए होते हैं। बच्चे और उनके माता-पिता वंशक्रम और रक्त सम्बन्धों से बंधे होते हैं। बच्चों के आपसी सम्बन्ध ऐसे होते हैं जो भाई-बहिनों की नातेदारी कीशृंखला से बंधे होते हैं और वे सामान्य वंशक्रम या रक्त से जुड़े होते हैं।

कुछ महत्वपूर्ण समूह एकल वंशीयक्रम से बंधे होते हैं। वे इस प्रकार हैं:

वंश परम्परा: परिवार द्विवर्ती होता है लेकिन वंश परम्परा एकल वंशीय होती है। यह समरक्त रिश्तेदारों का एक समूह है, जो अपने वंशक्रम को एक समान पूर्वज या पूर्वजों से जाने जाते हैं। जैसा कि गोत्र में पूर्वज मिथक होते हैं वैसे ये पूर्वज अतीत में अस्तित्व रखते थे। वंश परम्परा एक अन्त:समूह है। यह एकलवर्ती वंश समूह है। इसका अर्थ यह हुआ कि वंश परम्परा में वे सभी लोग शामिल होते हैं जो पितृवंशीय हैं। ऐसे वंशक्रमों में पूर्वज को पुरुष की ओर से देखते हैं और तब वंशक्रम को पिता से लड़के की ओर गिनते हैं। यदि वंशक्रम को स्त्री की ओर से खोजा जाता है, तब इसे मातृवंशीय कहते हैं। मातृवंशीय वंश परम्परा में सदस्यों के सम्बन्ध मां की ओर समझे जाते हैं।

> वंश परम्परा के सदस्य एक सामान्य आवास में रह भी सकते हैं और नहीं भी। संयुक्त परिवार भी वंश परम्परा का दृष्टान्त है, जहां तीन या चार पीढ़ियों के लोग एक साथ रहते हैं। वंश परम्परा अनिवार्य रूप से एक बहिर्विवाही समूह है।

गोत्र: गोत्र भी एक एकल वंशीय वंशक्रम समूह है। इसमें रिश्तेदारों का एक समूह होता है जो कि अपना उद्गम एक सामान्य पूर्वज के वंशक्रम से मानता है लेकिन इस क्रम के वंशों को जोड़कर नहीं बताया जा सकता। समान पूर्वज प्राय: एक मिथकीय साधु या सन्त होता है। यह हिन्दू समाज में पाया जाता है। इस प्रकार का पूर्वज अतिप्राकृतिक चरित्र का या टोटम की कोई वस्तु होती है जैसे कि चीता, मछली, सांप इत्यादि।

हिन्दुओं में वंशक्रम को कुछ ऋषियों के साथ देखा जाता है। जैसे कि कश्यप, भारद्वाज, गौतम, इत्यादि। सच में देखा जाए तो नातेदारों में, प्राय:, कोई अपरिचित व्यक्ति या वस्तु जो दूर अतीत में रहा हो रिश्तेदारों का पूर्वज होता है।

गोत्र के सदस्य अपने रिश्तेदारों को एक सामान्य वंशक्रम या रक्त सम्बन्धी समझते हैं। इसी कारण अक्सर गोत्र के लोग आपस में विवाह नहीं करते। दूसरे शब्दों में, गोत्र एक बहिर्विवाही नातेदारी समूह है।

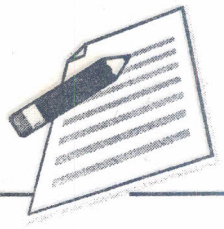

गोत्र को पितृसत्तात्मक कहते हैं, क्योंकि इसकी उत्पत्ति पुरुष से देखी जाती है। यदि स्त्री की ओर से वंशक्रम देखा जाता है तब इसे मातृवंशीय गोत्र कहते हैं, जैसा कि उत्तर-पूर्व के खासी और गारो जनजातियों में होता है। अंग्रेजी शब्द *क्लान* का अर्थ हिन्दी में *गोत्र* से होता है। जब विवाह की बातचीत होती है तब गोत्र पर विचार किया जाता है। बहुत स्पष्ट है कि एक ही गोत्र के लोगों में विवाह नहीं होता।

फ्रेटरी: फ्रेटरी वह एकल वंशीय समूह है जिसमें दो या दो से अधिक गोत्र होते हैं और जो एक दूसरे से जुड़े होते हैं। इसका अर्थ हुआ कि फ्रेटरी में एकल वंशीय गोत्र समूह होते हैं।

गोत्र की तरह फ्रेटरी एक बहिर्विवाही संगठन है। फ्रेटरी के सदस्य यह मानकर चलते हैं कि उनका एक ही पूर्वज है।

गोत्र जो फ्रेटरी को बनाते हैं अपनी व्यक्तिगत पहचान रखते हैं लेकिन समारोह के अवसर पर ये अपने विशेष दायित्व को पूरा करते हैं।

अर्धांश (Moitety): अर्धांश एक विषय सामाजिक समूह है, जो समूह को दो बराबर या गैर बराबर आधे हिस्सों में बांटता है और बांटने का यह आधार वंशक्रम होता है। प्रत्येक आधा हिस्सा आर्धांश कहलाता है।

अर्धांश के सदस्य इस विश्वास को मानते हैं कि उनका पूर्वज एक ही है और जिसकी विधिवत पहचान नहीं की जा सकती।

प्रत्येक अर्धांश को उपभागों में बांटा जाता है जिन्हें फ्रेटरी कहते हैं। प्रत्येक फ्रेटरी कई गोत्रों में बंटी होती है और प्रत्येक गोत्र कई वंशक्रम में बंटा होता है और अन्त में प्रत्येक वंशक्रम परिवारों में बंटा होता है।

ऐमोल कुकु, मणिपुर की अर्धांशों के सेट में बंधी होती है और प्रत्येक अर्धांश को फ्रेटरी में बांट दिया जाता है। दो अर्धांश वैवाहिक जोड़ों को तैयार करते हैं। यह इसलिए कि एक ही अर्धांश के लोग विवाह सम्बन्ध नहीं रख सकते लेकिन टोडा जनजाति में पाये जाने वाले अर्धांश वैवाहिक भी हैं। यद्यपि आगे चलकर वे उप विभाजित बहिर्वैवाहिक गोत्र में बदल जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 14.4

1. निम्न कथन 'सही' है या 'गलत'; बताइए:

   वंशक्रम के नियम एक व्यक्ति को विशेष तरह के नातेदारों के साथ पूर्वजों के आधार पर जोड़ता है।

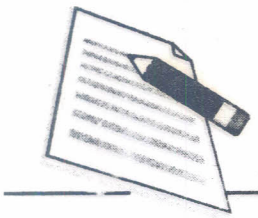

Notes

2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

एक व्यक्ति के द्विवर्ती रिश्तेदारों के सम्बन्ध को बताने वाला पद .... हैं।

3. निम्न में से सही उत्तर छांटिए:

एक गोत्र रिश्तेदारों का एक सेट है:

1. जिसके सदस्य किसी परिचित पूर्वज के वंशज हैं।
2. जिसके सदस्यों में विश्वास है कि वे एक सामान्य मिथिक पूर्वज के सदस्य हैं।
3. जैसे कि माता-पिता और बच्चे।
4. उपरोक्त में से कोई नहीं।

14.9 नातेदारी व्यवहार

नातेदारी व्यवहार या व्यवहार की निश्चित रीतियां नातेदारी समूह के साथ लागू होती हैं। ये व्यवहार के प्रतिमान मौखिक/अमौखिक हो सकते हैं। नातेदारी की कुछ रीतियां निम्न प्रकार हैं:

परिहार: यह व्यवहार की ऐसी रीति है, जिसमें कुछ नातेदारों के साथ निकट अन्त: क्रिया करने के लिए कुछ प्रतिबन्ध लगे होते हैं। हिन्दुओं में ऐसे प्रतिबन्धों के कारण रिश्तेदार एक दूसरे के साथ सीधी बातचीत नहीं करते। वे उनके साथ भौतिक सम्पर्क टाल देते हैं।

कुछ लोगों के साथ न्यूनतम सामाजिक सम्पर्क ही रखा जाता है। ये प्रतिबन्ध इन पर लगते हैं – सास-श्वसुर, और बहू, सास और दामाद, पति के बड़े भाई और छोटे भाई की पत्नी।

परिहास सम्बन्ध: परिहास का अर्थ है, हंसी-मजाक। कुछ नातेदार ऐसे हैं, जिनकी बड़ी प्रतिष्ठा होती है और उनके साथ हंसी-मजाक करना अपेक्षित व्यवहार है। परिहास सम्बन्ध दो व्यक्तियों के बीच वह सम्बन्ध है जिसमें एक व्यक्ति को प्रथा द्वारा यह छूट रहती है अथवा किसी समय कभी-कभी उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह दूसरे व्यक्ति के साथ हंसी-मजाक करे तथा दूसरे से यह अपेक्षा की जाती है कि वह बुरा न माने।

अनुसंतति सम्बोधन: नातेदारों के बीच में जब किसी माध्यम से सम्बोधन किया जाता है तो वह अनुसंतति सम्बोधन है। सम्बोधनों का यह माध्यम संतान होती है। पति अपनी पत्नी को तथा पत्नी-पति को, पुत्र-पुत्री के माध्यम से सम्बोधन करते हैं। हमारे देश में हिन्दू और जनजातियों में पति-पत्नी के लिए एक दूसरे का नाम लेना वर्जित है। ऐसे परिवारों में उत्पन्न होने वाले बच्चों के माध्यम से पति-पत्नी को सम्बोधित किया जाता है। हमारे यहां खासी जनजाति में यह प्रथा विशेष रूप से पायी जाती है।

मातुल सम्बन्ध: यह सम्बन्ध मातृवंशीय जनजाति समाज की विशेषता है। इस समाज में मामा और भानजा या भानजी के सम्बन्धों को विशेष महत्व दिया जाता है। मातृवंशीय परिवार में मामा परिवारिक मामलों का निर्णायक होता है। वह भानजे-भानजी के लिए भी स्नेह का पात्र होता है।

पितृष्वसा अधिकार: नातेदारों के ये सम्बन्ध मातुल सम्बन्धों के विपरीत हैं। इन सम्बन्धों में माता के भाई के स्थान पर पिता की बहिन का स्थान महत्वपूर्ण होता है। ये सम्बन्ध पितृवंशीय परिवारों की विषेशता है। हमारे देश की टोड़ा जनजाति में दाह संस्कार का अधिकार बुआ को प्राप्त है।

कुवेद: नातेदारी सम्बन्धों में कुवेद का सम्बन्ध पत्नी के प्रसव काल से है। इस प्रथा के अनुसार, जब पत्नी प्रसव पीड़ा का अनुभव करे, प्रसव काल में रहे तो उसके पति के लिए यह आवश्यक है कि वह भी इन अवसरों पर प्रसव पीड़ा की अनुभूति व्यक्त करे और अपनी पत्नी की तरह प्रसव काल को गुजारे। प्रसव काल में पत्नी जैसा भोजन व विश्राम करती है, उसी तरह का व्यवहार करने की अपेक्षा पति से भी की जाती है। हमारे देश में भी कहीं-कहीं जनजातियों में ऐसे सम्बन्ध देखने को मिलते हैं। खासी जनजाति में पति अपनी पत्नी की तरह तब तक नदी पार नहीं करता या कपड़े नहीं धोता जब तक पत्नी के बच्चा न हो जाए।

पाठगत प्रश्न 14.5

1. निम्न कथन 'सही' है या 'गलत'; बताइए:

   पितृष्वसा नातेदार वे होते हैं जो पिता की बहिन को विशेष भूमिका देते हैं।

2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

   वह नातेदारी व्यवहार, जिसमें दो नातेदार एक दूसरे का सम्बोधन नहीं करते, उन्हें कहते हैं.....।

3. निम्न में से सही उत्तर छांटिए:

नातेदारी व्यवहार जिसमें मामा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, उस पद को कहते हैं:

(i) कुवेद

(ii) परिहार

(iii) परिहास सम्बन्ध

(iv) मातुल सम्बन्ध

(v) उपरोक्त में से कोई नहीं

(vi) कुवेद किसे कहते हैं? एक वाक्य में परिभाषित कीजिए।

आपने क्या सीखा

- नातेदारी व्यक्तियों के बीच में रक्त सम्बन्ध, विवाह और दत्तक ग्रहण सम्बन्ध होते हैं।
- नातेदारी पारिवारिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति और सामाजिक मान्यता है।
- वह रिश्तेदारी जिसे सामाजिक रूप से मान्यता नहीं होती उसे नातेदारी के क्षेत्र में नहीं गिना जाता।
- नातेदारी इस तथ्य का परिणाम है कि मनुष्य वैध सम्बन्धों द्वारा बच्चों का प्रजनन करता है।
- नातेदारी दो प्रकार की है (1) समरक्त नातेदार; और (2) वैवाहिक नातेदार।
- कुछ मान्यता प्राप्त सम्बन्ध ऐसे हैं जिन्हें हम कल्पनात्मक नातेदार कहते हैं। कल्पनात्मक नातेदार का बहुत अच्छा दृष्टान्त दत्तक ग्रहण है।
- समरक्त नातेदार या रक्त सम्बन्धी नातेदार सामान्य पूर्वज पर निर्भर है।
- वैवाहिक नातेदारी विवाह पर आधारित है और इसमें दो परिवारों को एक दूसरे के साथ जोड़ते हैं।
- नातेदारी सम्बन्धों को निकटता की दृष्टि से तीन भागों में बांटा जा सकता है: (1)प्राथमिक नातेदार (2) द्वैतीयक नातेदार: और (3) तृतीयक नातेदार।
- व्यक्ति और समूह के लिए कई तरह की नातेदारी व्यवस्था महत्वपूर्ण है।

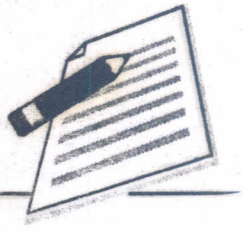

Notes

- नातेदारी व्यक्तियों को पहचान और प्रतिष्ठा देती है। उनहें सामाजिक और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा प्रदान करती है और निश्चित प्रकार के व्यवहार के प्रतिमान और व्यक्तियों को भूमिका देती है।
- नातेदारी समूह विरचना (Formation) का आधार है।
- नातेदारी समूह की सुदृढ़ता को बनाती है, शत्रुओं के खिलाफ समूह को संगठित करती है तथा धार्मिक और सामाजिक अन्त:क्रिया को नियंत्रित करती है। वह विवाह को नियंत्रित करती है और संस्कारों तथा धार्मिक त्यौहारों को नियमित करती है।
- नातेदारी के आधार पर ही प्रतिष्ठा, सम्पत्ति और नाम का निर्धारण होता है।
- नातेदारी अपने नातेदारों को राजनीतिक शक्ति, व्यावसायिक एवं आर्थिक लाभ देती है।
- नातेदारी के विभिन्न प्रकार के पद हैं, जिन्हें सम्बोधित करने में काम में लिया जाता है।
- नातेदारी के पदों के वर्गीकरण का आधार और उनके प्रकार निम्न हैं:

  (1) भाषायी संरचना:

  (क) प्रारम्भिक पद

  (ख) कृत्रिम पद।

  (ग) विवरणात्मक पद

  (2) पदों के उपयोग के तरीके:

  (क) सम्बोधन के तरीके

  (ख) संदर्भ सूचक पद

  (3) व्यवहार में लागू करने की श्रेणी पर आधारित:

  (क) विवरणात्मक पद

  (ख) वर्गात्मक पद
- वंशक्रम को जोड़ने के नियम या व्यक्तियों को कतिपय नातेदारों के साथ जोड़ने वाले नियम ये कतिपय नातेदार जो विदित या वंशज होते हैं, उन्हें आधार मानकर वंशक्रम को जोड़ा जाता है।
- वंशक्रम के दो नियम हैं:

  (क) एकल वंशक्रम के नियम

  (ख) द्विवर्ती वंशक्रम के नियम

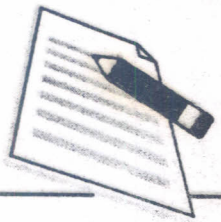

Notes

- एकल वंशक्रम के नियम दो प्रकार के हैं:
  (क) पितृ वंशक्रम
  (ख) मातृ वंशक्रम
- ऐसे समाज जिनमें एकल वंशक्रम के नियम नहीं होते हैं, उन्हें द्विवर्ती समाज कहते हैं। परिवार में मां और पिता की ओर से जो रिश्तेदार होते हैं, उनका समान महत्व होता है।
- नाते-रिश्तों का समूह द्विवर्ती होता है, जो कि समारोह के अवसर पर अस्थायी रूप से एक हो जाते हैं।
- कुछ एकल वंशीय नातेदार समूह होते हैं, जैसे कि:

(i) परिवार (ii) वंश-परंपरा (iii) गोत्र (iv) फ्रेटरी (v) अर्धांश।

- परिवार, मूलत: व्यक्ति, उसकी पत्नी तथा उनके अविवाहित बच्चों से निर्मित होता है। इसमें तीन या चार पीढ़ियों तक के निकटतम व्यक्तियों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- वंश परम्परा एकऐसे नातेदारों का समूह होता है जो एक सामान्य पूर्वज अथवा वंश से संबद्ध होते हैं।
- गोत्र निकटतम वंशजों का वह स्वरूप होता है जो एक सामान्य मिथिकीय पूर्वज के नाम पर होता है जैसे-कश्यप, भारद्वाज आदि।
- फ्रेटरी दो या दो से अधिक गोत्रों जो परस्पर संबंधित होते हैं, से ही निकली हुई वंशपरंपरा होती है।
- अर्धांश एक ऐसा बड़ा सामाजिक समूह होता है जो एक समाज के दो भागों अथवा एकपक्षीय में विभाजित होने से संबद्ध होता है। इसमें से प्रत्येक भाग अर्धांश कहलाता है।
- इसमें से प्रत्येक भाग अर्धांश पुन: अनेक फ्रेटरियों में विभाजित होता है। प्रत्येक फ्रेटरी अनेक गोत्रों में पुन: विभाजित हो जाती है और फिर हर गोत्र अनेक वंश-परंपराओं तथा अनेक वंश-परंपराओं से अनेक परिवारों में बंट जाते हैं।
- नातेदार समूहों के विभिन्न सदस्यों के व्यवहार निश्चित और तुलनात्मक दृष्टि से स्थाई नमूनों की ओर संकेत करते हैं।
- कुछ नातेदारी के कुछ व्यवहार निम्नानुसार हैं,

(1) परिहार (2) परिहास संबंध (3) अनुसंतति संबोधन (4) मातुल संबंध (5) पितृष्वसृपा अधिकार (6) कुवेग

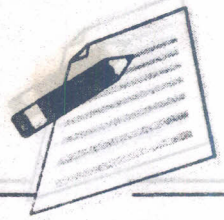

शब्दावली

वैवाहिक नातेदार: वे नातेदार जो वैवाहिक हैं।

पतिष्वसा अधिकार: नातेदारी व्यवहार जो बुआ को विशेष अधिकार देता है।

मातुल सम्बन्ध: नातेदारी व्यवहार जो मामा को विशेष अधिकार देता है।

द्विवर्ती नातेदार: यह नातेदारी व्यवस्था वह है, जो सम्पत्ति के अधिकारों या वंशक्रम को या तो स्त्री या पुरुष की रेखा में स्थानान्तरित की जाती है या इस अधिकार से इसे दिया जाता है कि न तो मां की ओर जोर दिया जाता है और न पिता की ओर।

गोत्र या सगोत्र: एक एकल वंशक्रम बहिर्विवाही समूह के नातेदार जो अपना वंशक्रम एक सामान्य पूर्वज के साथ जो अतीत में मिथक रहा हो, जोड़ते हैं। यह पूर्वज कोई कल्पित अतिप्राकृतिक चरित्र, एक पौधा या एक जानवर हो सकता है।

वर्गात्मक पद: एक नातेदारी पद जिसका कई नातेदारों के साथ सम्बन्ध जोड़ा जाता है जैसे कि चाचा, चाची इत्यादि।

समरक्त नातेदार: ये वे नातेदार हैं, जिनका रक्त सम्बन्ध है या सामान्य पूर्वज हैं।

कुवेद: कुवेद का सम्बन्ध पत्नी के प्रसव काल से है। इस प्रथा के अनुसार, जब पत्नी प्रसव पीड़ा का अनुभव करे तो पति के लिए भी यह आवश्यक है कि वह भी उसी पीड़ा का अनुभव करे। प्रसव काल में पत्नी जैसा भोजन व विश्राम करती है, उसी तरह का व्यवहार पति से करने की अपेक्षा की जाती है।

विवरणात्मक पद: एक व्यक्ति के विशिष्ट सम्बन्धों के लिए बनाये गये विशिष्ट पद।

ईगो: वह व्यक्ति जिसके आधार पर नातेदारी निश्चित की जाती है ईगो कहलाता है।

ममेरी-फुफेरी सन्तान: भाई-बहिनों के बच्चे।

वृहद कुटुम्ब: इसका तात्पर्य द्विवर्ती वंशक्रम के नातेदारों के समूह से है।

वंश परम्परा: एक रक्त सम्बन्धी समूह जो एकल वंशक्रम से जुड़ा होता है। इस वंशक्रम का पूर्वज एक वास्तविक सदस्य होता है, जिसे लोग याद रखते हैं। यह एक बहिर्विवाही समूह है।

मातृवंशीय: इसमें परिवार के प्राधिकार को दाय प्राप्ति या प्राथमिक रूप से स्त्रियों के द्वारा वंशक्रम चलता है। इसे मातृ रिश्तेदार भी कहते हैं।

अर्धांश: एक विशाल सामाजिक समूह को दो भागों में बांट देते हैं। ये दोनों भाग एकलवंशीय समूह पर आधारित होते हैं अर्धांश कहलाते हैं।

सहोदर भाई एवं बहिन: एक ही माता से उत्पन्न भाई-बहिनों में इस प्रकार के वंशक्रम के लिए एक साखीय पद का प्रयोग भी किया जाता है।

पाठान्त प्रश्न

1. नातेदारी के कितने प्रकार हैं? विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. व्यक्ति और समूह के लिए नातेदारी का क्या महत्व है?
3. नातेदारी पदों के वर्गीकरण के कौन से विभिन्न आधार हैं? विस्तार से बताइए।
4. एक साखीय नातेदारी समूह के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए।
5. नातेदारी व्यवहार के विभिन्न प्रकारों का विवेचन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1 (1) सही (2) समरक्त सम्बन्धी (3) (ii)

14.2 (1) गलत (2) समूह (3) (iv)

14.3 (1) सही (2) कृत्रिम (3) (v)

14.4 (1) सही (2) वृहद कुटुम्ब (3) (ii)

14.5 (1) सही (2) अनुसंतति सम्बोधन (3) (iv)